सप्तम अध्याय

समन्वित मूल्यांकन

सप्तम अध्याय

समन्वित मूल्यांकन

भारत मूलतः संस्कृति संपन्न देश है। वह एक शांतिप्रिय देश है। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ और भारत का कुछ अविभाज्य हिस्सा पूर्व पाकिस्तान और पश्चिम पाकिस्तान के रूप में निर्माण हुआ तथा 1971 में पूर्व पाकिस्तान बांगला देश के रूप में परिणत हुआ।

आज विश्व के सामने सर्व प्रमुख समस्या युध्द और शांति की है। यह एक सनातन समस्या है। इस समस्या को लेकर हमारे नाटककारों ने कुछ नाटक लिखे हैं। जिनमें विवेच्य नाटक -

1. घाटियाँ गूँजती हैं (डॉ.शिवप्रसाद सिंह)
2. नेफा की एक शाम (ज्ञानदेव अग्निहोत्री)
3. हाजीपीर का दर्रा (राजकुमार)
4. जय बाड़ला (डॉ.रामकुमार वर्मा)
5. युध्दमन (बृजमोहन शाह)

भारत स्वतंत्र होने पर इस देश पर पड़ोसी देशों ने आक्रमण किए। इन विदेशी आक्रमणों में चीनी और पाकिस्तानी आक्रमण विशेष उल्लेखनीय हैं। इन आक्रमणों से प्रभावित होकर हमारे नाटककारों ने युध्द और शांति की समस्या को ध्यान में रखकर नाटक लिखे।

स्वतंत्र भारत का संविधान विशेष महत्वपूर्ण है। इस संविधान में भारत की राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता पर बल दिया गया है। और भारत की विदेश नीति

में गुटनिरपेक्षता तथा तटस्थता सर्व प्रमुख रही हैं। लेकिन विदेशी देशों ने भारत पर जो आक्रमण किए उनका मुकाबला करने के लिए और देश की हिफ़ाजत के लिए भारत ने विवश होकर युध्द किए है।

हमारे नाटककारों ने मुख्यतयः जम्मू कश्मीर समस्या, नेफा (अरूणाचल) की समस्या तथा बाड़ला देश की समस्या को अपने नाटकों मे चित्रित किया है। यहाँ विवेच्य नाटककारों ने अपने विवेच्य नाटकों में विदेशी आक्रमण के विविध उद्देश्यों पर प्रकाश डाला है और साथ ही साथ युध्द के जिम्मेदार कौन है? इसका भी संकेत किया है। इतना ही नहीं आज 20 वीं शताब्दी में युध्द की तैयारी कैसे की जाती है? युध्द की कौनसी नीति अपनायी जाती है? युध्द में जासूस और रिपोरटर का काम क्या होता है? इसपर काफी प्रकाश डाला है। साथ ही साथ युध्द के दुष्परिणामों को भी चित्रित किया है। इस युध्द और शांति की समस्या में बुध्दिजीवियों पर भी प्रकाश डाला है। और भारत शांतिप्रिय देश है युध्द के खिलाफ उसका रूख है और शांतिप्रियता उसका उद्दिष्ट है - इन तथ्यों को प्रकट किया है।

हमारे विवेच्य नाटककारों की एक महत्वपूर्ण उपलब्धी यह है कि विदेशी आक्रमणों में भारत के जन साधारणों की स्थिति क्या है? इस बात को भी उन्होंने निरूपित किया है। साधारणतयः पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन, विदेशियों से नफ़रत आदि बातों को चित्रित करते हुए सैनिक भी जनसाधारण के रूप में कैसे दिखाई देता है? इस बात को भी अत्यंत सुंदर शब्दों में व्यक्त किया है। युध्दजन्य स्थिति में केवल युध्द का वर्णन करना नाटककारों को अभिप्रेत नहीं है इस दृष्टि से सैनिकों को भी जनसाधारण के रूप में चित्रित करना और उनके विविध मनोभावों को दर्शाना नाटककारों की प्रतिभा का ही द्योतक है।

विवेच्य नाटकों में नाटककारों ने राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना पर भी यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है। राष्ट्रीयता और राष्ट्रप्रेम को उजागर करते हुए नाटककारों ने देशद्रोहियों पर भी विदारक प्रकाश डाला है और विदेशी राष्ट्रों की आक्रमणकारी प्रवृत्ति को भी दर्शाया है। विवेच्य नाटकों के सांस्कृतिक संदर्भ में "घाटियाँ गूँजती

हैं" नाटक में हिमालय का सांस्कृतिक महत्व रेखांकित करने में नाटककार डॉ॰शिवप्रसाद सिंह कामयाब हुए हैं। भारतीय संविधान के अनुसार भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है और इसका भी परिचय आलोच्य नाटकों में दिखाई देता है। भारत की "परोपकाराय पुण्याय" नीति विवेच्य नाटकों में विशेष दर्शनीय हैं। सांस्कृतिक विघटन पर भी अपवादभूत प्रकाश डाला गया है।

नाटक प्रदर्शन की वस्तु है। प्रदर्शन का स्थल रंगमंच है और विवेच्य नाटक रंगमंच पर सफलता पूर्वक खेले गए हैं। स्वातंत्र्योत्तर नाटककारों की सबसे बड़ी उपलब्धि नाटकों की रंगमंचीयता ही है। विवेच्य नाटक रंगमंच के कसौटी पर खरे उतरते है। विवेच्य नाटकों में कथ्य के अनुसार मंचसज्जा और दृश्यविधान का प्रयोग करने में नाटककारों की विशेषता दिखाई देती है। मंचसज्जा में और पात्रों के अभिनय विशिष्टता में निर्देशक का योगदान भी महत्वपूर्ण है। पात्रों की वेशभूषा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विवेच्य नाटकों में भाषाशैली, संवाद योजना तथा गीत योजना का प्रयोग उल्लेखनीय है। विवेच्य नाटककारों ने मंचसज्जा के विविध उपकरणों का इस्तेमाल किया है। "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में हिमालय का परिवेश, "हाजीपीर का दर्रा" में हाजीपीर के दर्रे की मजार आदि सांकेतिक मंचसज्जाएँ हैं। विवेच्य नाटकों में युध्द के क्षेत्रों का भी रणस्थल के रूप में मंचसज्जा के लिए प्रयोग किया गया है। "युध्दमन" नाटक में साधारण जनता की मानसिक स्थिति को और युध्दस्थल दोनों को ही विविध दृश्यों में विभाजित करते हुए मंचसज्जा की एक अनूठी तथा यथार्थवादी शैली अपनाई गई है। पात्रों के अभिनय में युध्दजन्य प्रसंगोंकी नियोजना मुख्यरूपेन सार्थक प्रतीत होती है। नाटक में रंगसंकेतों के माध्यम से प्रकाश योजना और ध्वनि संकेतों का प्रयोग किया गया है जो वातावरण निर्मिती की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखते हैं।

"घाटियाँ गूँजती हैं", "नेफा की एक शाम", "जय बाड़ला", "युध्दमन", नाटकों पर दर्शकीय, पाठकीय प्रतिक्रियाएँ उपलब्ध हुई हैं। इन प्रतिक्रियाओं के स्वरूप यह दिखाई देता है कि सभी ने अनुकुलता दर्शक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की हैं।

इस प्रतिक्रियाओं के आधारपर कहा जा सकता है कि विदेशी आक्रमणों को परिलक्षित करते हुए हमारे नाटककारों ने तत्कालीन युध्द स्थिति तथा राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना को उजागर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज का युग वैज्ञानिक युग हैं, जादातर मूल्य विघटन का युग है। आज मानव मूल्यों को और सांस्कृतिक मूल्यों को विघटित किया गया दिखाई देता है। युध्द और शांति की समस्या एक ज्वलंत समस्या हैं। और इस समस्या को उद्‌घाटित करने में और कुछ मात्रा में इस समस्या को सुलझाने में नाटककारों ने अपनी कलम चलाई है। भारत पर हुए विदेशी आक्रमणों के कारण त्रस्त तथा भयभीत जनता को भी चित्रित करने का श्रेय नाटककारों को दिया जा सकता है। आलोच्य नाटककार सच्चे अर्थ में भारतीय है। और भारतीयता की पहचान उनके नाटकों में यत्र-तत्र नजर आती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारत पर विदेशी आक्रमण के संबंध में लिखे गए विवेच्य नाटक युध्द और शांति की समस्या का उद्‌घाटन करने में समर्थ है। साथ ही साथ नाटककारों की पैनी दृष्टि कारयत्री और भावयत्री प्रतिभा तथा रंगमंचीय परिज्ञान के कारण ये नाटक हिंदी नाट्य सृष्टि में अपना विशेष महत्व रखते हैं और भारतीयता को प्रशस्त करते हैं। भारतीय नाटककारों की भारतीयता इन नाटकों की जान है। ये नाटक साठोत्तर नाटक साहित्य की श्रीवृध्दी करते हैं।